Str. 268, 58. Genauer: «Hinter dem Rücken Jemandes Fehler besprechen». — 60. Schol. वृद्याप्रयवाकानामी दे।

Str. 269, 61. Calc. Ausg. und E. रूतं।

Str. 270, 67. Schol. जनस्य प्रतीपा वादा जन ।

Str. 271, 69. Schol. गर्हापि । तुगुप्सापि ।

Str. 272, 71. Schol. स शापा रते मैथुनविषये नार्णा । मैथुनमुद्दिश्य गालीत्पर्थः । द्रषणमित्पेके । म्रानार्णापि ।

Str. 273, 74. Calc. Ausg. समज्ञा, die Scholien: समाज्ञायते उनया समाज्ञा। समाख्येति भागृहिः। — 75 76. रुशित व्हिनस्ति परं रुशिती व्हिंसा। श्राष्ट्रयालाङ्गश्चायम् तेन रुशञ्ज्ञाब्दो रुशिद्धच इत्यिप। न प्रभा श्रप्टभा। उश्तीत्यन्ये। Die Calc. Ausg. liest रूपती, verbessert aber dieses im Druckfehlerverzeichniss in उपती. Wenn man diese Lesart aufnehmen wollte, müsste man in der vorhergehenden Zeile यशा अभिष्यासमाज्ञा als Compositum fassen. — 78. Eine Randglosse beim Scholiasten: व्हर्षक्रीडावचनपर्यायावेता।

Str. 274, 79. Schol. मैवं कृषा इति वाच्यत इत्यर्थः । — 80. Calc. Ausg. D. E. संभाषा प्रनु ।

Str. 275, 83. Calc. Ausg. D. und E. परिदेवनम्, die Scholien: परिवेदनमनुशोचनम्

Str. 276, 86. B. D. विशेधोक्तिर. — 89. Die Scholien: वयैवं कर्त-व्यमिति संदेश: । तद्रूपा वाक्संदेशवाक्

Str. 278, 93. Calc. Ausg. प्रश्नव: 1 — 94. Dies. म्रागश्च । — Schol. समाधिरपि ।

Str. 279, 97. Auch नाट्यधर्मी, die Scholien.

Str. 280, 98. Die Scholien: रागगीत्यादिकं गीतम् प्राविशिक्यादि-